दोहा

नरेन्द्र सोनकर 'कुमार सोनकरन'

वे नरेन्द्र पशुतुल्य हैं, क्या ब्राह्मण क्या सूद।
अन्तस में जिनके नहीं, मानवता मौजूद।1।

खून मांस भी एक है , जाति योनि भी एक।
फिर नरेन्द्र हैं क्यों नही,सभी आदमी एक ?2

जिस मिट्टी के आप हैं, उसी मिट्टी के सूद।
ब्राह्मण देवता बोलिए,क्यों अछूत हैं सूद ?3

शत प्रतिशत अब साथियों,हुई बात ये सिद्ध।
धरती पर दूजा नहीं, मानव जैसा गिद्ध।4।

स्वर्ग धरा को मानिए, करिए काम अनूप।
हैं नरेन्द्र माता-पिता, स्वयं ईश के रूप।5।

माता तो सुमाता है, माँ से बड़ा न कोय।
स्वर्ग,सुख,सुरभोग,सुकूं,माँ-आँचल में होय।6।

लिंग भेद के तर्ज़ पर , जिन्हें रहा है बाँट।
समझ मुरख मानव उन्हें, एक नदी दो घाट।7।

पेड़ पेड़ सब कोय कहें,प्राण कहें ना कोय।
पेड़ जगत के प्राण हैं, पेड़ न काटे कोय।8।

मिथ्या होता फूल है , कड़वा होता शूल।
फूल सहज स्वीकार्य हैं,अस्वीकार्य हैं शूल।9।

लुट रहा यहाँ आदमी, किसे कहूँ मैं चोर।
चोर हवस की खोपड़ी,नहीं आदमी चोर।10।

खूं से अपने जो रहें, देश, गाँव, घर साधि।
लोग उन्हीं को दे रहें,खच्चर-गधा उपाधि।11।

फलीभूत कर देश को, समझें खुद को धन्य।
कृषक आज भी हैं वहीं,सुख के भोगी अन्य।12।

क्षण-क्षण बीते खेत में ,वर्षा हो या धूप।
उफ्फ ये फिर भी नहीं,मिले आय अनुरूप ?13

का छोटन की बात सुने, खुदहि बड़े हम लोग।
अनहद अहम की भावना,लेके जिये ल लोग।14।

इक ही उल्लू से हुआ, खाक गुलिस्ता राम।
बैठे गर हर शाख पर, क्या होगा अंजाम ?15

जनमानस कल्याण ही,है जिसका अस्तित्व।
माने उसके ज्ञान का , लोहा सारा विश्व।16।

लड़े धर्म के नाम पर, आये दिन इंसान।
देख सियासत धर्म की,हैरत में भगवान।17।

जाति-धर्म के नाम पर, छुआछूत का रोग।
नमक छिड़कते घाव पर,रहें मज़हबी लोग।18।

जिस दिन सच्चा आप भी,पढ़ लेंगे इतिहास।
हो जाएगा आप ही, खाक अंधविश्वास।19।

रूप सज्जा या नरेन्द्र, बदलें लाख लिबास।
मगर आज भी है वही, नारी का इतिहास।20।

छोड़ दिसंबर चल पड़ा, सहगामी के संग।
देख जनवरी आ गई, लेकर नया उमंग।।21

होता है जिस छंद में,जितना अधिक प्रवाह।
होता है उतना अधिक,शब्द-शब्द पर वाह।।22

दिल की जब होगी प्रिये,दिल से कोई बात।
तभी समझ में आएगी,दिल को दिल की बात।।23

फर्क उसे कुछ भी नही,पड़ता है मेरे यार।
घाट तिरे माटी नही, जिसके आती यार।।24

मात - पिता गुरु आप हैं,गूढ़ ज्ञान के धाम।
शीश नवा कर जोड़कर,शत-शत करूं प्रणाम।।

ISSN:2583-8849